सुनहरा हंस

सुनहरा हंस

एक बार की बात है, एक आदमी अपनी पत्नी और
तीन बेटों के साथ रहता था.
वे सभी जंगल के किनारे एक झोपड़ी में रहते थे.
सबसे छोटे बेटे को लोग सिंपलटन कहते थे.
हर कोई उस पर हंसता था क्योंकि वह अपने भाइयों
की तरह चतुर नहीं था.

एक दिन सबसे बड़े बेटे को जलाऊ लकड़ी काटने के लिए
जंगल में जाना पड़ा. क्योंकि उसमें काफी समय लगता,
इसलिए माँ ने उसे खाने में एक केक और एक वाइन की
बोतल दी.

जब वह जंगल में आया, तो वहां बड़े बेटे को एक छोटा भूरा आदमी मिला.
"मैं बहुत भूखा और प्यासा हूं," छोटे भूरे आदमी ने कहा. "क्या तुम मुझे अपने केक का एक छोटा टुकड़ा, और शराब की एक घूंट दोगे?"

"बिल्कुल नहीं," बड़े बेटे ने जवाब दिया. “अगर मैं तुम्हें दूंगा तो मेरे लिए कुछ नहीं बचेगा. तुम यहाँ से चले जाओ."
फिर उसने अपनी कुल्हाड़ी से एक बड़े पेड़ को काटना शुरू किया.

जल्द ही उसकी कुल्हाड़ी फिसल गई जिससे उसका हाथ कट गया. उसे पट्टी बांधकर तुरंत घर लौटना पड़ा.

उसके बाद दूसरा बेटा जंगल में से लकड़ी लाने गया. माँ ने उसे भी दोपहर के खाने के लिए एक केक और एक वाइन की बोतल दी, बिल्कुल वैसे ही, जैसे उसने अपने बड़े लड़के को दी थी.

बीच वाले लड़के को भी वो छोटा भूरा आदमी दिखाई दिया. आदमी ने लड़के से केक का एक टुकड़ा और शराब की एक घूंट मांगी.

दूसरा लड़का भी अपने बड़े भाई जैसा ही स्वार्थी था. "अगर मैं तुम्हें कुछ दूंगा, तो मेरे पास खाने को बहुत कम बचेगा," उसने कहा. "तुम यहाँ से चले जाओ और मुझे परेशान मत करो."

फिर बीच वाले लड़के को भी मतलबी होने के लिए अपने बड़े भाई जैसी ही सज़ा मिली. जैसे ही उसने पेड़ काटना शुरू किया, उसके हाथ से कुल्हाड़ी फिसल गई और उसका पैर कट गया. उसे बिना किसी लकड़ी के घर वापिस लौटना पड़ा.

"पिताजी," सिंपलटन ने कहा, "कृपा मुझे जंगल जाने दें और लकड़ी काटने का मौका दें?"

"अरे नहीं," पिता ने कहा. "तुम अभी कुल्हाड़ी का उपयोग और जंगल के काम के बारे में कुछ भी नहीं जानते हो. तुम्हारे दोनों बड़े भाइयों को अभी-अभी चोट लगी है. मैं नहीं चाहता कि तुम किसी भी मुसीबत में पड़ो."

"कृपया, पिताजी, मुझे जाने की अनुमति दें," सिंपलटन ने फिर विनती की. "मुझे यकीन है कि मैं यह काम कर पाऊंगा."

आखिर में पिता ने उसे जंगल में लकड़ी काटने की इज़ाज़त दे दी. अब घर में केक और शराब नहीं बची थी. इसलिए सिंपलटन अपने साथ कुछ बासी रोटी और खट्टी बीयर की एक बोतल लेकर चला.

जैसे ही सिंपलटन जंगल में पहुंचा, एक छोटे भूरे आदमी ने आकर उससे मुलाकात की.

"मैं बहुत भूखा और प्यासा हूं," उसने कहा. "क्या तुम मुझे अपने केक का एक टुकड़ा, और शराब का एक घूंट दोगे?"

सिंपलटन ने कहा, "मुझे खेद है, मेरे पास केवल बासी रोटी और खट्टी बीयर ही है. आप चाहें तो मेरे साथ उन्हें साझा कर सकते हैं."

जब वे एक-साथ खाने के लिए बैठे, तो सिंपलटन ने पाया कि उसकी बासी रोटी एक बढ़िया केक में बदल गई थी, और बीयर, उम्दा शराब में बदल गई थी.

खाने के बाद, छोटे भूरे आदमी ने कहा, "क्योंकि तुमने इतने प्रेम से मुझे अपना भोजन खिलाया है, इसलिए मैं तुम्हें ज़रूर कोई इनाम दूंगा."

फिर छोटे भूरे आदमी ने एक पेड़ की तरफ इशारा किया. "तुम उस पेड़ को काट कर गिरा दो," उसने कहा, "फिर तुम वहां कोई भाग्यशाली चीज़ पाओगे."

सिंपलटन ने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और उस पेड़ को काटने लगा.

जब पेड़ गिर गया, तो उसने जड़ों के बीच एक सुंदर सुनहरे हंस को पाया, जिसके शुद्ध सोने के पंख थे.

सिंपलटन ने हंस को बड़ी सावधानी से उठाया. फिर घर जाने के बजाय, वह रात बिताने के लिए पास की सराय में चला गया. खुद बिस्तर पर सोने से पहले सिंपलटन ने उस हंस को खलिहान में एक बिस्तर पर सुरक्षित रखा.

सराय के मालिक की तीन बेटियाँ थीं. जब उन्होंने हंस को देखा, तो उनमें से प्रत्येक उस सुनहरे हंस का एक पंख पाने के लिए तरसने लगीं.

सबसे बड़ी लड़की पहले खलिहान में गई और उसने हंस का एक पंख निकालने की कोशिश की. पर उसका हाथ हंस से चिपक गया और वो खुद को छुड़ा नहीं पाई!

फिर बाकी दोनों बहनें भी आईं और उन्होंने अपनी बड़ी बहन की मदद करने की कोशिश की. लेकिन जैसे ही उन्होंने अपनी बहन को छुआ, वे भी तेजी से उससे जाकर चिपक गईं. फिर तीनों बहनों को एक-दूसरे से चिपके हुए पूरी रात खलिहान में गुजारनी पड़ी.

अगली सुबह सिंपलटन आया और उसने हंस को अपनी बांह के नीचे दबाया, और फिर वो बाहर निकला. उसने उन तीनों लड़कियों पर कुछ ध्यान ही नहीं दिया जो अभी भी हंस और एक-दूसरे से चिपकी थीं और छूटने में असमर्थ थीं. तीनों लड़कियां भी सिंपलटन के पीछे-पीछे चलीं.

जब वे चले जा रहे थे तो रास्ते में उन्हें एक पुजारी मिला. सिंपलटन का तीन लड़कियों द्वारा पीछा करने की बात उसे गलत और अनैतिक लगी. पुजारी ने उन लड़कियों को सिंपलटन का पीछा करने से रोका. उसने उन लड़कियों का हाथ पकड़ा. लेकिन फिर पुजारी भी उन लड़कियों के साथ चिपक गया और उनके साथ-साथ चलने को मज़बूर हुआ.

सिंपलटन और सुनहरे हंस के पीछे-पीछे वे सभी एक साथ चले. फिर आगे जाकर उन्हें एक खेत में दो किसान खुदाई करते हुए दिखे.
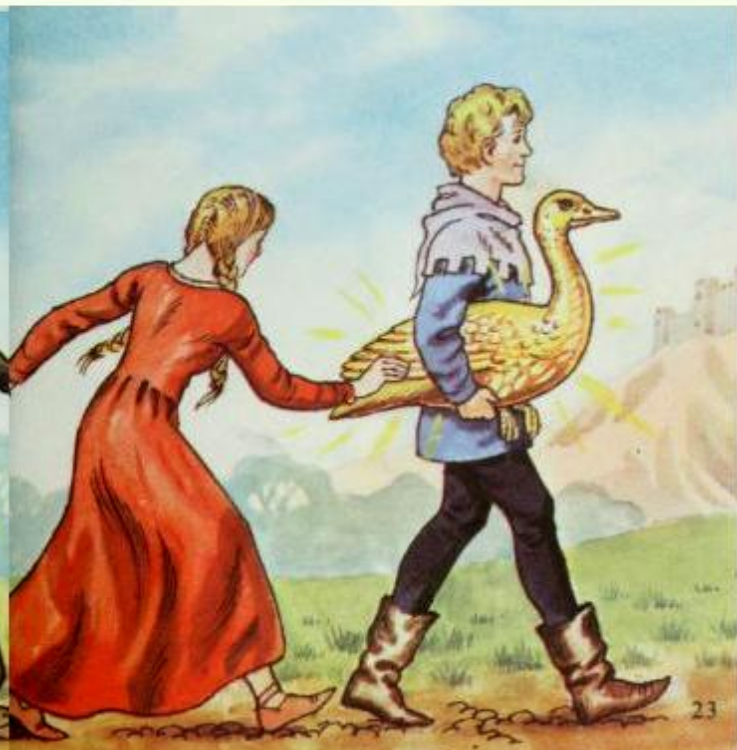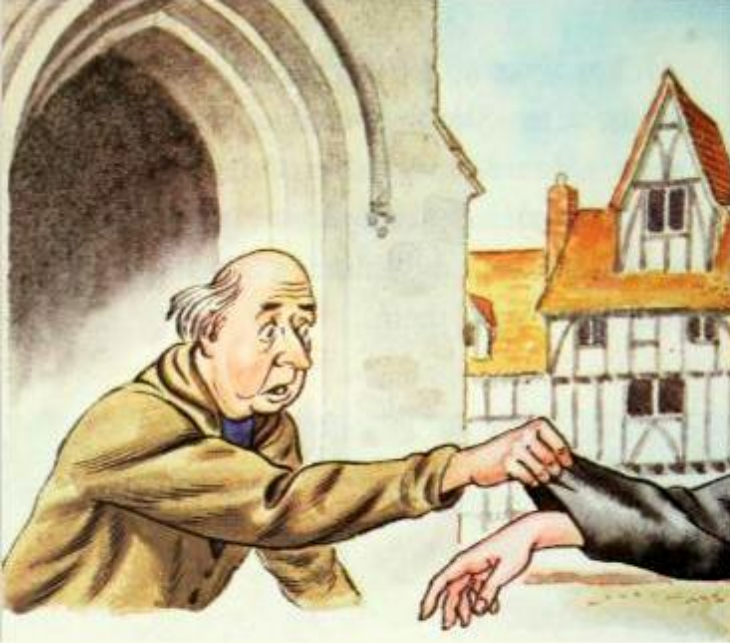
जब वे गाँव से गुज़रे तो एक बूढ़ा आदमी, सिंपलटन और तीन लड़कियों का पीछा करते हुए पुजारी को देखकर चकित रह गया.
उसने पुजारी से कहा, "यह मत भूलो, कि आज दोपहर तुम्हें एक नवजात शिशु का नामकरण करना है," और यह कहकर बूढ़े ने पुजारी के कोट की आस्तीन को पकड़ा. फिर वो बूढ़ा भी उनके साथ चिपक गया. और अब उसे भी उनके पीछे-पीछे चलना पड़ा.

"हमारी मदद करो," पुजारी और बूढ़ा आदमी एक साथ चिल्लाए.
दोनों किसानों ने अपने फावड़े एक ओर फेंके और उनकी मदद के लिए दौड़े. उन्होंने उन्हें खींचने की कोशिश की, लेकिन वे भी तेजी से उनके साथ चिपक गए.

अब इस छोटी बारात में कुल मिलकर सात लोग थे. सभी लोग मजबूती से सुनहरे हंस के साथ चिपके थे. सिंपलटन, हंस को बगल में दबाए खुशी-खुशी अपने रास्ते पर चलता गया. उसे इसमें कुछ भी अटपटा नहीं लगा.

सिंपलटन को यह पता नहीं था कि वो कहाँ जा रहा था. वो बस चल रहा था, और उसका भाग्यशाली हंस उसकी बांह के नीचे सुरक्षित था.

वो पहाड़ी, खेत और घाटियों को पार करते हुए अपने हंस के साथ आगे बढ़ा. वो कस्बों और नए गांवों के बीच में से गुज़रा. जब लोगों ने उस छोटी बरात को देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए.

अंत में, जब शाम होने को आई, तब उन्हें पहाड़ी की चोटी पर एक बड़ा शहर दिखाई दिया.

सिंपलटन ने शहर में जाने का मन बनाया. उसके पीछे की छोटी बारात के पास दूसरा और कोई चारा नहीं था. वो भी उसके पीछे-पीछे चली.

उस शहर में एक राजा राज्य करता था. राजा की एक बेटी थी. राजकुमारी हमेशा बहुत उदास और गंभीर रहती थी. वो कभी भी हंसती नहीं थी और इस वजह से पूरा शहर भी उदास और दुखी रहता था.

राजा को अपनी बेटी की बहुत चिंता थी. उसने घोषणा करवाई कि जो भी व्यक्ति राजकुमारी को हँसाएगा वो उससे अपनी बेटी की शादी कर देगा.

जैसे ही सिंपलटन शहर में घुसा, उसने राजा की घोषणा के बारे में सुना. इसलिए वह अपनी छोटी बारात को सीधे राजमहल में ले गया.

राजकुमारी, बड़ी उदास और दुखी लग रही थी. वो खिड़की में बैठी नीचे टकटकी लगाए देख रही थी.
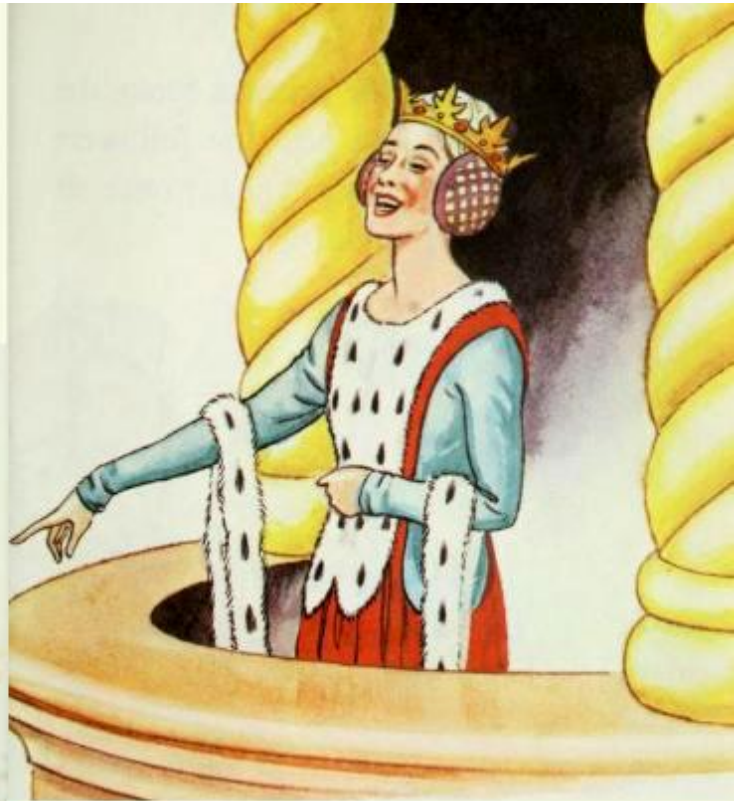
फिर जैसे ही राजकुमारी ने सिंपलटन, हंस और उसके पीछे सात थके हुए लोगों को देखा, वह ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी. वो इतनी हंसी जैसे वो हंसी कभी रुकेगी ही नहीं.

राजकुमारी की हंसी ने सुनहरे हंस के जादू को तोड़ दिया. फिर तुरंत सुनहरे हंस से जुड़े और चिपके सभी लोग छूट गए. एक-एक करके वे सभी अपने-अपने घर वापिस चले गए.

सिंपलटन, सुनहरे हंस को पकड़कर, सीधे राजा के पास गया और उसने इनाम बतौर राजकुमारी को अपनी दुल्हन के रूप में मांगा.

अपनी बेटी को हँसता देख राजा बहुत खुश हुआ, लेकिन वो नहीं चाहता था कि वह सिंपलटन जैसे गरीब लक्कड़हारे से उसकी बेटी की शादी हो.

"इतनी जल्दी नहीं," राजा ने कहा. "उससे पहले तुम उस आदमी को लाओ जो मेरे तहखाने की पूरी शराब पी सके."

सिंपलटन ने एक बार फिर से उस बूढ़े, भूरे आदमी के बारे में सोचा और वो जंगल के लिए निकल पड़ा. वहाँ, उसी स्थान पर जहाँ उसे सुनहरा हंस मिला था, उसने एक अजनबी को देखा, जो बहुत उदास लग रहा था.

"क्या बात है?" सिंपलटन से पूछा.

"मैं बहुत, बहुत प्यासा हूँ," अजनबी ने कहा.
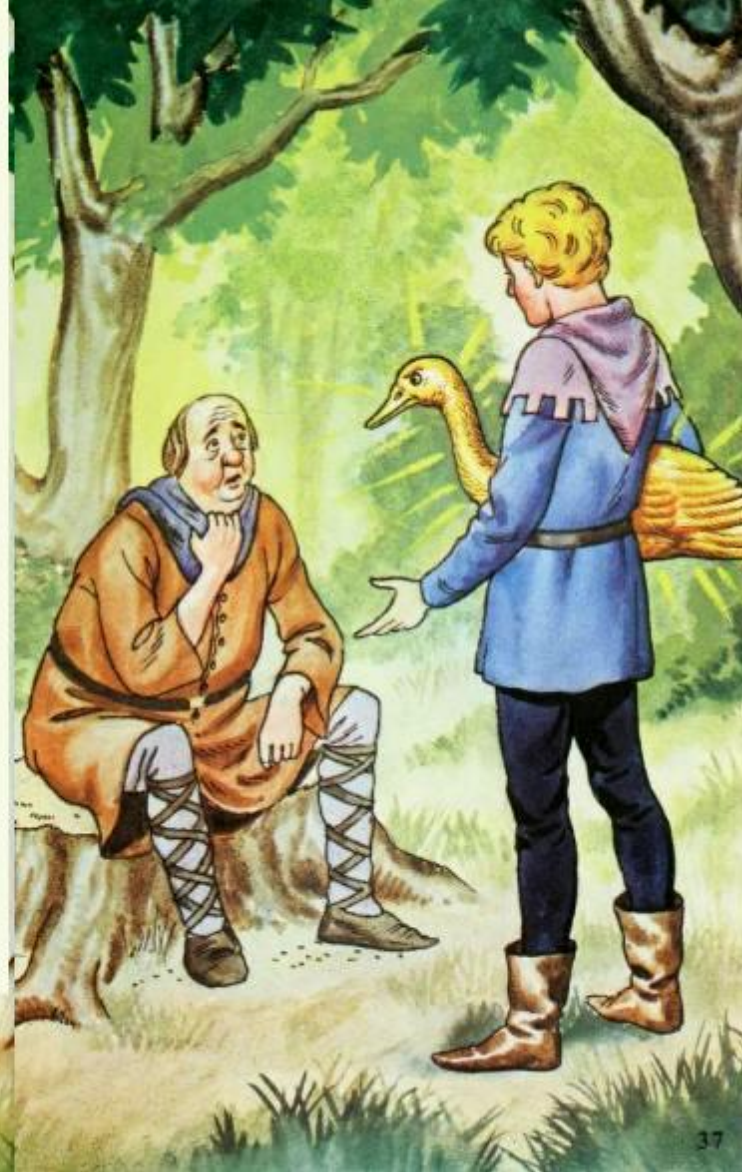
सिंपलटन ने कहा, "मुझे लगता है कि मैं आपकी ज़रूर मदद कर सकता हूं. आप चलें मेरे साथ. आपके पास पीने को शराब से भरा एक तहखाना होगा."

फिर वे दोनों राजा के महल में गए. अजनबी वहां बैठ गया और उसने शराब पीना शुरू की.

उस दिन सूरज निकलने से पहले, राजा के तहखाने में शराब का हरेक ड्रम सूख गया था. सिंपलटन एक बार फिर अपनी दुल्हन का दावा करने के लिए राजा के पास गया.

"नहीं," राजा ने कहा. राजा नहीं चाहता था कि उसकी बेटी किसी साधारण लड़के से शादी करे. "अब तुम एक ऐसा आदमी लेकर आओ जो एक दिन में रोटी का पूरा पहाड़ खा सके."

बिना कोई समय बर्बाद किये, सिंपलटन सीधे जंगल में उसी स्थान पर वापस गया. इस बार उसे वहां एक व्यक्ति मिला जो बहुत, बहुत भूखा था.

यह सुनकर सिंपलटन बहुत प्रसन्न हुआ. उसने कहा, "मुझे लगता है कि मैं आपकी मदद कर पाऊंगा. आप मेरे साथ चलें. आपके खाने के लिए रोटियों का पूरा एक पहाड़ होगा."

वे वापस महल में गए. राजा ने शहर का सारा आटा मंगवाकर उस सभी की रोटियां बनवायीं. वो रोटियां महल के सामने एक पहाड़ की तरह दिख रही थीं.

जंगल के उस आदमी ने कुर्सी, या यहाँ तक कि थाली दिए जाने तक की प्रतीक्षा नहीं की. उसने तुरंत खड़े-खड़े खाना शुरू कर दिया.

उसने लगातार एक के बाद एक रोटी खाई. पूरे शहर के लोग उस इंसान की भूख को घूरने के लिए इकट्ठा हुए.

जैसे ही सूरज ढलने लगा, उसने आखिरी रोटी को भी खत्म कर दिया. फिर उसने "थैंक यू सिंपलटन," कहा और वहां से गायब हो गया.
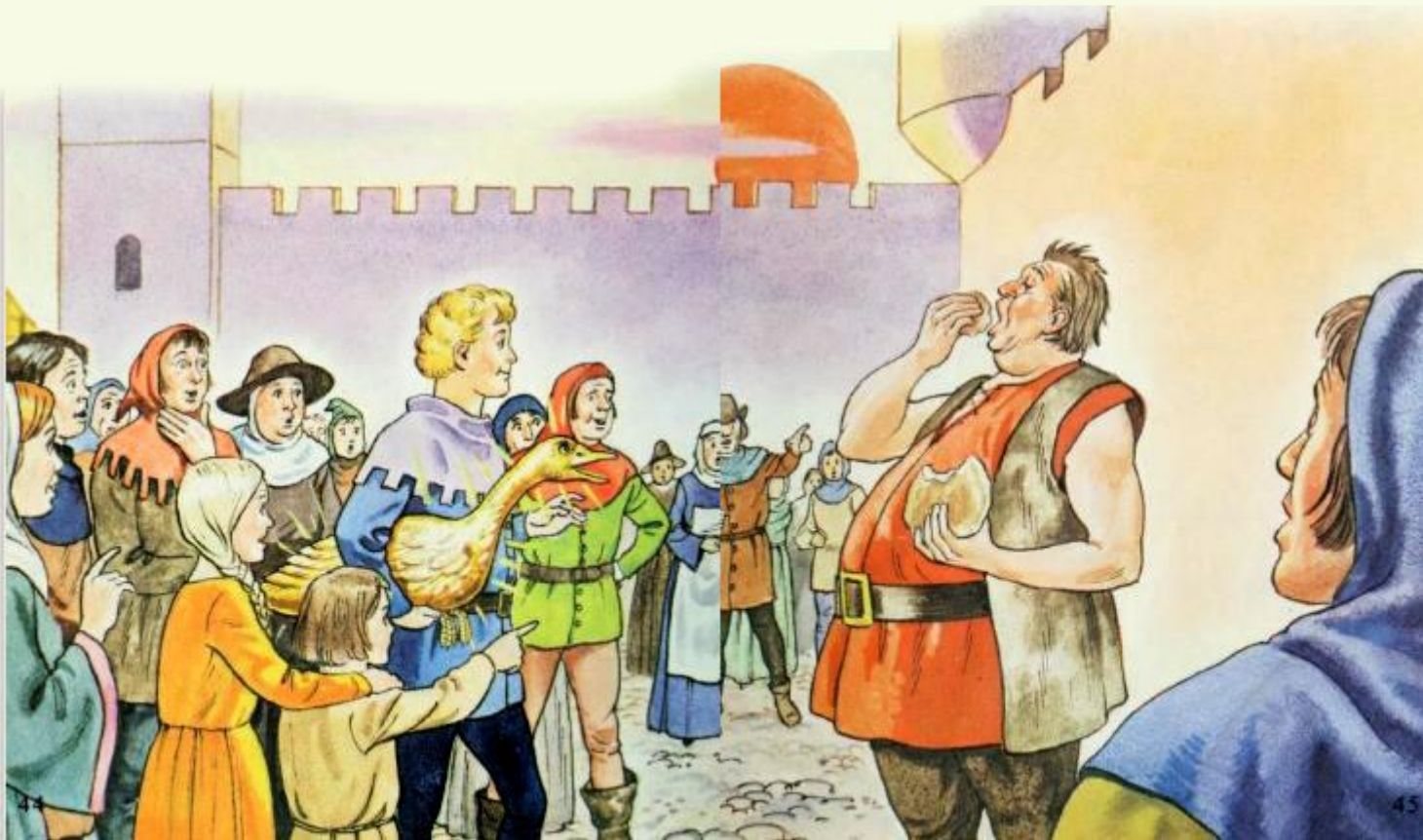
सिंपलटन एक बार फिर राजा के पास गया और तीसरी बार उसने अपनी दुल्हन का दावा पेश किया. एक बार फिर राजा ने उससे मना किया. इस बार उसने कहा, "तुम मुझे एक ऐसा जहाज लाकर दो, जो ज़मीन और समुद्र दोनों पर तैर सके. तभी मैं तुम्हें अपनी बेटी दूंगा."

एक बार फिर से सिंपलटन जंगल के लिए निकला, और इस बार वो वहां उस छोटे, भूरे आदमी से मिला, जिसके साथ उसने कभी अपना भोजन साझा किया था.
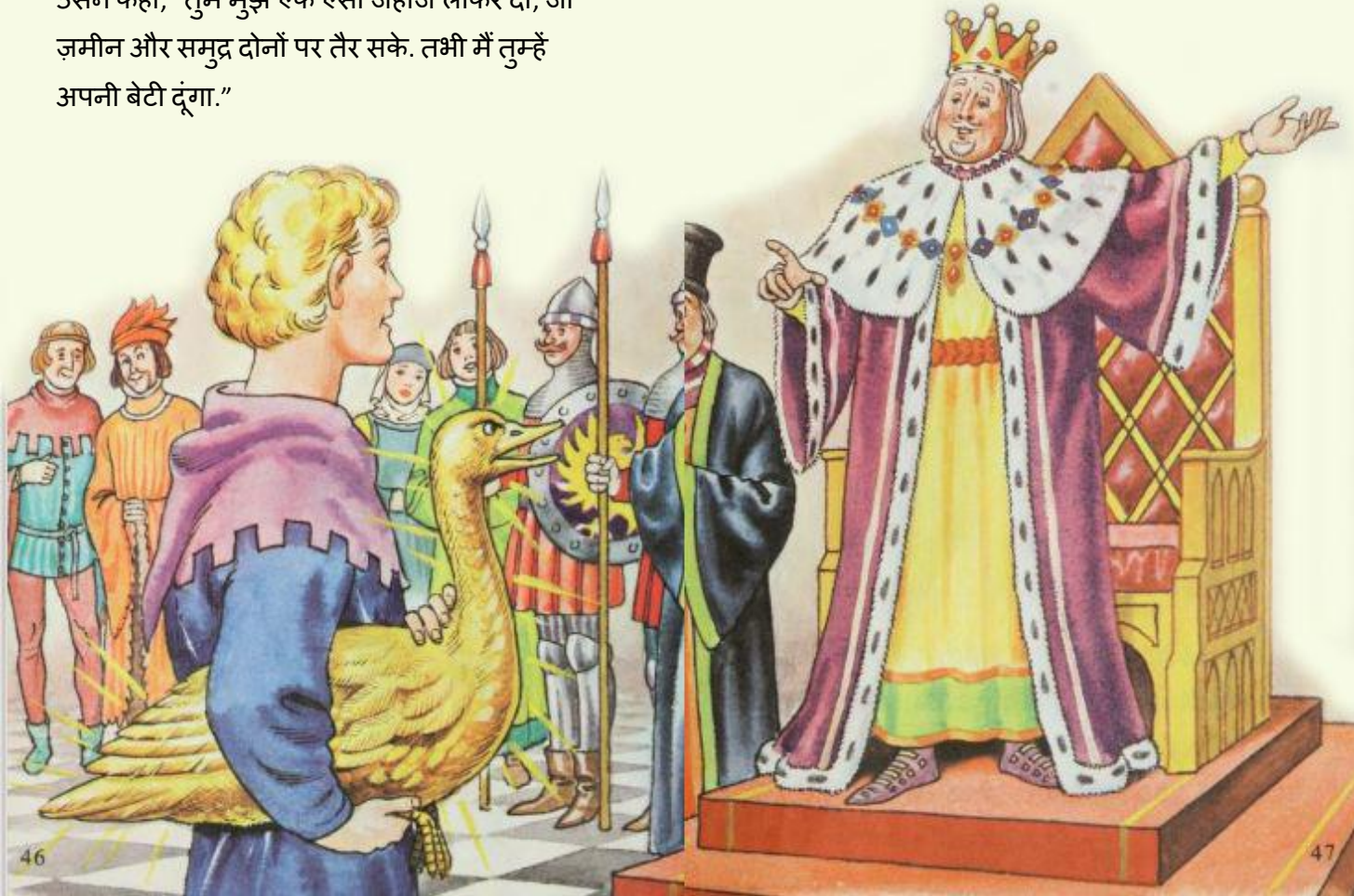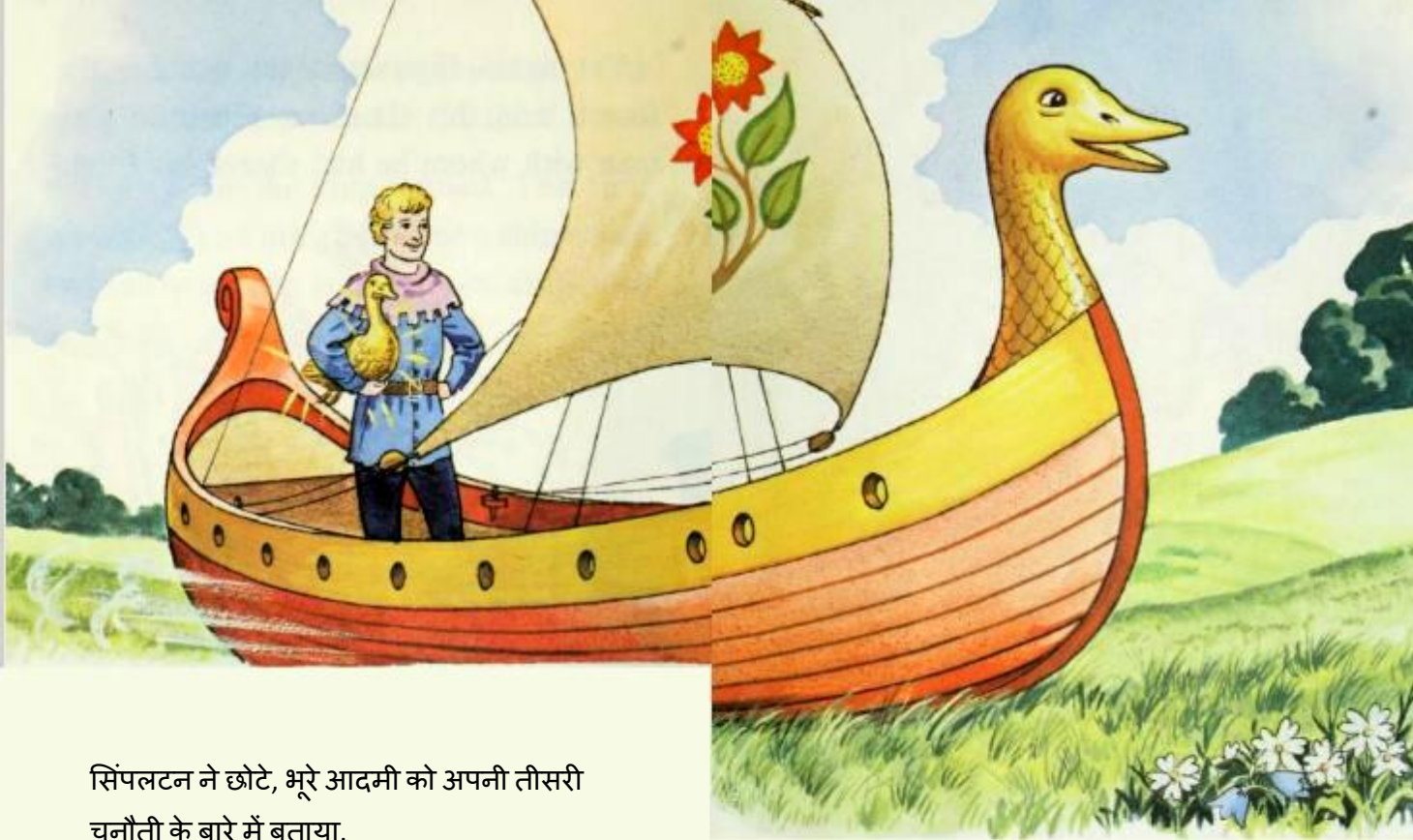
सिंपलटन ने छोटे, भूरे आदमी को अपनी तीसरी चुनौती के बारे में बताया.
छोटे भूरे आदमी ने कहा, "मैंने तुम्हारे लिए शराब पी, मैंने तुम्हारे लिए रोटी खाई, और अब मैं तुम्हें एक नायाब जहाज भी दूंगा क्योंकि तुम मेरे प्रति इतने दयालु थे."

इस बार, सिंपलटन महल में वापस नहीं गया. वो अपने जहाज में सवार होकर पूरे देश की सैर के लिए निकला.

जब उसका सुंदर जहाज महल के पास पहुंचा, तो राजा ने सिंपलटन से कहा कि अब वो राजकुमारी से तुरंत विवाह कर सकता था.

सिंपलटन एक बहुत अच्छा राजकुमार बना. फिर राजकुमारी और सिंपलटन दोनों बड़ी ख़ुशी के साथ रहे. सुनहरे हंस को महल में एक विशेष कमरे में रखा गया. लेकिन किसी ने भी उस छोटे भूरे आदमी को दुबारा फिर से नहीं देखा.

समाप्त